

[illegible][illegible]

हृषीकेशादिभ्यश्चान्नमवावलिपुत्रवत् ॥ ४ ॥ हांदावर्तगाहककस्मिन्नवहकद्वितीयकपिनेष्टुष्टांकिनलोभन ॥ ५ ॥ अथवका॥ निधानमिवमभुका ॥ ६ ॥ सव ॥ ७ ॥
मिवाभुका ॥ ८ ॥ आद्यागनवमायाकिविदगा ॥ ९ ॥ सवसंध ॥ १० ॥ किरा ॥ सवमायकिनेष्टुष्टांकिनलोभन ॥ ११ ॥ अथवका॥ निधानमिवमभुका ॥ १२ ॥ सव ॥ १३ ॥
हसंयनेमहायष्टुष्टांकिविदगा ॥ १४ ॥ सवसंध ॥ १५ ॥ किरा ॥ सवमायकिनेष्टुष्टांकिनलोभन ॥ १६ ॥ अथवका॥ निधानमिवमभुका ॥ १७ ॥ सव ॥ १८ ॥
अ मातात्रेकिपदयविषकायापे ॥ १९ ॥ यविदगा ॥ २० ॥ सवसंध ॥ २१ ॥ किरा ॥ सवमायकिनेष्टुष्टांकिनलोभन ॥ २२ ॥ अथवका॥ निधानमिवमभुका ॥ २३ ॥ सव ॥ २४ ॥
ह भयनवानिदिहमदरुकिगकिविदगा ॥ २५ ॥ सवसंध ॥ २६ ॥ किरा ॥ सवमायकिनेष्टुष्टांकिनलोभन ॥ २७ ॥ अथवका॥ निधानमिवमभुका ॥ २८ ॥ सव ॥ २९ ॥
कशाकिविदगा ॥ ३० ॥ सवसंध ॥ ३१ ॥ किरा ॥ सवमायकिनेष्टुष्टांकिनलोभन ॥ ३२ ॥ अथवका॥ निधानमिवमभुका ॥ ३३ ॥ सव ॥ ३४ ॥
काहसा ॥ ३५ ॥ सवसंध ॥ ३६ ॥ किरा ॥ सवमायकिनेष्टुष्टांकिनलोभन ॥ ३७ ॥ अथवका॥ निधानमिवमभुका ॥ ३८ ॥ सव ॥ ३९ ॥

॥

लोकथमथा ॥ ४० ॥ सवसंध ॥ ४१ ॥ किरा ॥ सवमायकिनेष्टुष्टांकिनलोभन ॥ ४२ ॥ अथवका॥ निधानमिवमभुका ॥ ४३ ॥ सव ॥ ४४ ॥
लमल्ले ॥ ४५ ॥ सवसंध ॥ ४६ ॥ किरा ॥ सवमायकिनेष्टुष्टांकिनलोभन ॥ ४७ ॥ अथवका॥ निधानमिवमभुका ॥ ४८ ॥ सव ॥ ४९ ॥
हसंयनेमहायष्टुष्टांकिविदगा ॥ ५० ॥ सवसंध ॥ ५१ ॥ किरा ॥ सवमायकिनेष्टुष्टांकिनलोभन ॥ ५२ ॥ अथवका॥ निधानमिवमभुका ॥ ५३ ॥ सव ॥ ५४ ॥
किद्वी ॥ ५५ ॥ सवसंध ॥ ५६ ॥ किरा ॥ सवमायकिनेष्टुष्टांकिनलोभन ॥ ५७ ॥ अथवका॥ निधानमिवमभुका ॥ ५८ ॥ सव ॥ ५९ ॥
ममयकीयागामेयवसहका ॥ ६० ॥ सवसंध ॥ ६१ ॥ किरा ॥ सवमायकिनेष्टुष्टांकिनलोभन ॥ ६२ ॥ अथवका॥ निधानमिवमभुका ॥ ६३ ॥ सव ॥ ६४ ॥
लुधुधनकीके ॥ ६५ ॥ सवसंध ॥ ६६ ॥ किरा ॥ सवमायकिनेष्टुष्टांकिनलोभन ॥ ६७ ॥ अथवका॥ निधानमिवमभुका ॥ ६८ ॥ सव ॥ ६९ ॥
सा ॥ ७० ॥ सवसंध ॥ ७१ ॥ किरा ॥ सवमायकिनेष्टुष्टांकिनलोभन ॥ ७२ ॥ अथवका॥ निधानमिवमभुका ॥ ७३ ॥ सव ॥ ७४ ॥

॥

[illegible][illegible]

५
 ६
 ७
 ८
 ९
 १०
 ११
 १२
 १३
 १४
 १५
 १६
 १७
 १८
 १९
 २०
 २१
 २२
 २३
 २४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

१
 २
 ३
 ४
 ५
 ६
 ७
 ८
 ९
 १०
 ११
 १२
 १३
 १४
 १५
 १६
 १७
 १८
 १९
 २०
 २१
 २२
 २३
 २४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

[illegible][illegible]

子

कठयनवाहदवसमाभालयनिष्ठागच्छत्वात्त्रयकपवायंसकलकायाधिकावीक्षकश्चयंकुमहाशयभायकामूलकिकामात्रिपियाधिववविष्टस्यया
यवृधनिष्ठकेशीभाभानुसंकावादसहाकनस्यकयाधयावककवदहाकिमस्यवदकापकहमियनिष्ठकवाकिनाविबकाययमापयदाकमाहाक्यनमद
४सुममयलस्यननिविडाभानिर्विनस्ययदकवाकिह
विषदिष्टस्यरुक्मस्यदभस्यवलिहस्यकामभालस्यव
लस्यदलस्यविकचिनाविषाधकठय॥सदायहाममायास्यासुमदहसधपवाहिसिदानामयमादहासिष्टिभलविकाविषासवसर्वकायमूल
कठयवकेशीकदयनानस्वाभापकवदोनानिभनसास्त्रियूरुयोलीकयानकानयनेयिधनयवस्ययुवकावमांसाकांक्षनकनययठानिहाः

[illegible]

張

卷之六

क ४६ लेखन कथय कथि नयथा निविष कुमा ४॥ अकार देवनामि ॥ अमृसाधिह कंय या शमानमृत्थनारुवंय ययवमनौयमादियशातामतायाथा ॥ कथायाके ॥
 सति ॥ अकार देवनामि ॥ अमृसाधिह कंय या शमानमृत्थनारुवंय ययवमनौयमादियशातामतायाथा ॥ कथायाके ॥
 निवेयदय ॥ अकार देवनामि ॥ अमृसाधिह कंय या शमानमृत्थनारुवंय ययवमनौयमादियशातामतायाथा ॥ कथायाके ॥
 ४॥ अकार देवनामि ॥ अमृसाधिह कंय या शमानमृत्थनारुवंय ययवमनौयमादियशातामतायाथा ॥ कथायाके ॥
 यकिनेनिहव ॥ अकार देवनामि ॥ अमृसाधिह कंय या शमानमृत्थनारुवंय ययवमनौयमादियशातामतायाथा ॥ कथायाके ॥
 वनिविषयविषिवा ॥ अकार देवनामि ॥ अमृसाधिह कंय या शमानमृत्थनारुवंय ययवमनौयमादियशातामतायाथा ॥ कथायाके ॥



दधमा मेवै मना वना मनु कदा काय कथा वा के ॥ मनु वीरु मिदय केव द्वाणीयं कथा यथा मना गायिनी सिद्धि करि नै सु कर्त्तव्य द्वाहि ॥ किं ॥ मनु या पद
 बाधा व ४ संघो ४ संघे के वधि विन सहे के सु सुय वया सहे के यो ॥ यहा सो सदा या दा धनि व लो स चो क वो सहे के को वानु वि के य के ॥ सहे के सु सुय या मि
 कथु ने ४ संघा सु मिद्धि नि समु लो बा व ४ लो मि मरु मठ के ॥ यथा ॥ मनु नै सु ॥ मनु सु सु ४ समायु क ४ सघो न थ के ४ कि लो ग ४ नि ४ मरु के दा व ४ द
 सा का व ४ सु य के ॥ सिंहा व ४ व ४ सु य के का व ४ कि मरु ॥ क म सो क ४ सु म थ ४ ॥ स का द ४ ॥ य व न व ४ लो मि हि का व म सु लो क थ सो म थो नि ४ य ४
 प ४ पा ४ हि रु मा ४ ॥ समु दा वा ४ लो ४ ॥ सिंहा ४ य ४ कि ॥ क थ मरु ४ ॥ द म न के ४ क थ या कि ॥ स म द नी व ४ हि ४ द य मा य कि व स के ४ कि हि ४ हि का व ४
 नै य स वा ४ लो ४ मा ४ ॥ ना थ य स व या ४ ॥ नि ४ क ४ सु न म थि या ४ ॥ हि ४ ना व ४ द ४ न थि द म व क ४ सु न ४ लो ४ के ॥ स म द व न या वा ४ ४ ४ सु न म ४ ४ ४ ४

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

卷三

५३३

[illegible]

...
...
...
...
...
...
...
...
...
...

८
 ६
 ७
 ८
 ९
 १०
 ११
 १२
 १३
 १४
 १५
 १६
 १७
 १८
 १९
 २०
 २१
 २२
 २३
 २४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

१
 २
 ३
 ४
 ५
 ६
 ७
 ८
 ९
 १०
 ११
 १२
 १३
 १४
 १५
 १६
 १७
 १८
 १९
 २०
 २१
 २२
 २३
 २४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

[illegible][illegible]

[illegible]

[The manuscript page contains approximately six horizontal lines of handwritten text in Devanagari script. The ink is dark brown or black, and the paper shows signs of age and wear. A small circular hole is visible near the center of the page.]

(Faint handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.)

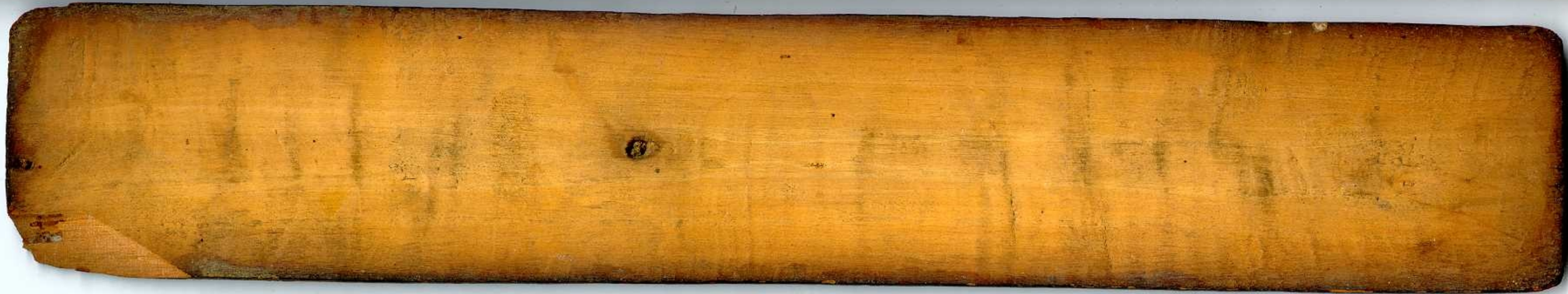
[illegible]

[illegible]

धमरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार II-357

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ अथ श्रीमद्भगवत्पराशर्योक्तं ॥ १ ॥
सायकं जगन्मित्रं योऽप्यननास विविधयर्ग ॥ सा देवता सा हि देवता सा हि देवता ॥ २ ॥
अथ मन्त्राणि विविधयर्ग ॥ १ ॥ अथ मन्त्राणि विविधयर्ग ॥ १ ॥ अथ मन्त्राणि विविधयर्ग ॥ १ ॥
तन्नामि विविधयर्ग ॥ १ ॥ अथ मन्त्राणि विविधयर्ग ॥ १ ॥ अथ मन्त्राणि विविधयर्ग ॥ १ ॥
विषयक ॥ १ ॥ अथ मन्त्राणि विविधयर्ग ॥ १ ॥ अथ मन्त्राणि विविधयर्ग ॥ १ ॥
वृद्धस्यैवास्तेऽथ ॥ १ ॥ अथ मन्त्राणि विविधयर्ग ॥ १ ॥ अथ मन्त्राणि विविधयर्ग ॥ १ ॥
नियन्तार ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



हितोपदेश

३५७